Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 1879–1883

MEERABAI'S DEVOTION IN THE PERSPECTIVE OF PUBLIC CONSCIOUSNESS

लोकचेतना के परिप्रेक्ष्य में मीराबाई की भक्तिभावना

AK Bindu [1]

[1] Co-teacher, Department of Hindi, Cochin University of Science and Technology, Kerala

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.2707

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: "Ayam Nijh Paroveti Ganana Laghu Chetsam Udacharitanam Tu Vasudhaiva Kutumbakam" (Mahopanishad-VI-71-73) Research Summary: Literature The specialty of India, rich in culture, philosophy and art, has been the feeling of unity in diversity. This is not a boast but a reality that the best culture in the world is Indian culture. Within its ambit are contained all the principles of 'Vasudhaiva Kutumbakam' for the development of the world nation. Since ancient times, in this divine land which has given birth to many virtuous souls, great saints, ascetics, yogis, valiant warriors, social reformers, seekers and thinkers have incarnated and guided mankind and society through their deeds. Literature has been the main means of propagating the basic mantra of culture 'Vasudhaiva Kutumbakam' in the entire world. In this land of India, great texts like Ramayana and Mahabharata were written, which are documents of India's invaluable culture. But globalization, globalization The world has changed today due to the impact of liberalization etc. The decline of our tradition, culture, history, philosophy etc. indicates cultural destruction. Humans who have changed from being liberal to narrow-minded are responsible for this. The bad culture born out of egoistic concerns is a threat to the existence of the world. It is becoming dangerous for the society. In this context, it is very relevant and the need of the hour to think about Meerabai and her devotion.

Hindi: साहित्य,संस्कृति,दर्शन एवं कला से सुसंपन्न भारत की विशेषता रही है अनेकता में एकत्व की भावना। यह कोई गर्वोक्ति नहीं अपितु वास्तविकता है कि विश्व की सर्वोत्कृष्ट संस्कृति भारतीय संस्कृति है। इसकी परिधी में विश्व राष्ट्र के विकास के 'वसुधैव कुटुम्बकम' के सारे सूत्र निहित हैं। अनेक पुण्यात्माओं को जन्म देनेवाले इस दिव्य भूमि में प्राचीनकाल से ही महान संतों,तपस्वियों,योगियों,पराक्रमी योद्धाओं,समाज सुधारकों , साधकों व विचारकों ने अवतरित हो मानव जाति एवं समाज को अपने कर्मों द्वारा मार्गदर्शन किया है। संस्कृति के मूल मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम' को समग्र विश्व में प्रचारित-प्रसारित करने का मुख्य साधन साहित्य रहा है। इसी भारत भूमि में रामायण,महाभारत जैसे महान ग्रंथ रचे गये थे,जो भारत की अमूल्य संस्कृति के दस्तावेज़ हैं। लेकिन भूमंडलीकरण,भूमंडीकरण,उदारीकरण आदि के असर से आज दुनिया बदल गयी है। हमारी परंपरा,संस्कृति,इतिहास,दर्शन आदि का ह्रास सांस्कृतिक सत्यानाश का संकेत करता है। उदारचरित्र से लघुचेतना में परिवर्तित मानव ही इसकेलिए जिम्मेदार है। अहम की चिंता से उत्पन्न अपसंस्कृति संसार के अस्तित्व केलिए खतरनाक हो रहा है। इसी संदर्भ में मीराबाई और उनकी भक्ति पर विचार करना अत्यंत प्रासंगिक एवं समय की मांग है।

Keywords: Public Consciousness, Bhakti Movement, Mirabai, Sagun-Nirgun, Prema Bhakti, Madhurya Bhakti, Upasika, Andal, Akkamahadevi, Krishna Bhakti, Rebellious Spirit, लोकचेतना, भक्ति आंदोलन, मीराबाई, सगुण-निर्गुण, प्रेमा भक्ति, माधुर्य भक्ति, उपासिका, आंडाल, आक्क्महादेवी, कृष्णभक्ति, विद्रोही भावना

"अयं निज: परोवेति गणना लघु चेतसाम

उदारचरितानाम तु वसुधैव कुटुम्बकम"

(महोपनिषद-VI-71-73)

1. प्रस्तावना

भक्तिकाव्य भक्ति आंदोलन की उपज है। भक्ति आंदोलन का उद्भव और विकास मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। क्योंकि भक्ति को मुक्ति का सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वप्रमुख साधन बताया गया है। भक्ति में श्रद्धा और प्रेम की जो मूल भावना है वह तो मनुष्य की सहज वृत्ति है। लेकिन एक विशिष्ट शक्ति के रूप में मध्ययुग में ही इसका विकास हुआ है। सभी भारतीय भाषाओं के भक्ति काव्य में नज़र डाले तो यह ज़ाहिर होता है कि भक्ति आंदोलन में स्त्री भक्तों की संख्या कम नहीं है। हिन्दी की मीराबाई,तमिल की आंडाल,कन्नड़ की अक्कमहादेवी,मराठी की महदंबा,बहिणोबाई ,कान्होपात्रा,कश्मीर की लल्लेश्वरी आदि इसी आंदोलन के देन है

2. भक्ति आंदोलन में मीराबाई

सम्पूर्ण भारत में व्याप्त भक्ति आंदोलन से मीराबाई परिचित और प्रभावित थी। साथ ही उनका व्यक्तित्व इस आंदोलन के उदात्त मूल्यों और प्रगतिशील तत्वों से निर्मित था । हिन्दी भक्तिकाव्य में 'गिरिधर गोपाल'से अनन्य प्रेम करनेवाली मीरा का स्थान बेहद महत्वपूर्ण है। भारत के पौराणिक एवं लोकसाहित्य में श्रीकृष्ण एक ऐसा पात्र है जो समाज के सभी वर्गों को सदियों से समान रूप से प्रभावित और आकर्षित करता रहा है। रसिकों केलिए रसिकशिरोमणि है तो राजनीतिज्ञों केलिए वे कुशल कूटनीतिज्ञ और सफल शासक हैं। योद्धाओं केलिए वे शूरवीर और चतुर सेनापति ,कलाकारों केलिए कला सम्राट,बुद्धिजीवियों केलिए चिंतक और दार्शनिक, संतों केलिए निस्पृह और योगेश्वर,जनसाधारण केलिए वे भगवान हैं।श्रीकृष्ण विविधताओं के सागर है। इसी सगुण-साकार गिरधर गोपाल की उपासिका है मीराबाई। जैसे –

'लोक-लाज कुल शृंखला तजि, मीरा गिरधर भजी'।

भक्तिमार्ग पर चलते हुए उन्होंने लोकरूढ़ियों,लोकमर्यादाओं और नारी परतंत्रता की जंग लगी शृंखलाओं को तोड़ फेंका। सर्वाधिक अपमान,तिरस्कार और घोर यंत्रणाओं का जहर पीकर भी वे निर्भय एवं अडिग बनी रहीं । तत्कालीन सामंती समाज में एक स्त्री,वह मेड़ता के राठौड़ राजपूत कुल की बेटी और मेवाड़ के महाराणा परिवार की बहू,ऊपर से विधवा। यही थी मीरा की अपनी दुनिया । मीरा ने इस संसार के भयावह धर्म के विरुद्ध भक्ति को औज़ार बनाकर खुला विद्रोह किया। मीरा केलिए कृष्ण भक्ति साधन और साध्य दोनों है। सबसे पहले नाभादास के भक्ति साहित्य में मीरा का उल्लेख मिलता है। वे कहते हैं कि "गोपियों की तरह मीरा ने कलियुग में कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रदर्शित की। तमाम सामाजिक परम्पराओं और पारिवारिक बंधनों को तोड़कर भगवान श्रीकृष्ण या गिरधर की प्रशंसा में पद गाये हैं"। अपने भक्ति साधना पथ पर वे निरंकुश एवं निडर भाव से अग्रसर हुई और सभी प्रकार की सांप्रदायिक,पारिवारिक एवं सामाजिक वर्जनाओं को नकारकर श्रीकृष्ण के यश का सम्पूर्ण गान किया। डॉ. भगवानदास तिवारी के अनुसार "मीरा का भक्तिमार्ग सांप्रदायिक पगडंडी न होकर स्वतंत्र राजमार्ग था"।

3. मीरा की भक्ति में सगुण-निर्गुण का संगम एवं स्वतंत्र विचार

मीरा के व्यक्तित्व में ज्ञान,कर्म और भक्ति की एकरूपता का अद्भुत समन्वय है। मीरा को तीर्थंकर की सज्ञा देकर आचार्य रजनीश जी , विरह और भक्ति की प्रतिमूर्ति कहकर गीता के महान चिंतक स्वामी रामसुखदास जी , मीरा को स्वयं भक्ति का अवतार मानकर मुरारी बापु जी जैसे महान लोगों ने मीरा के व्यक्तित्व के बहुआयामी पक्ष को उजागर किया है। भक्त अपने आपमें एक चिंतक या दार्शनिक भी होता है। मीरा के भक्ति दर्शन में वेद,पुराण, द्वैताद्वैतवाद, द्वैतवाद,शुद्धाद्वैत ,पुष्टिमार्ग,चैतन्य के औचित्य भेदाभेदवाद आदि दार्शनिक सिद्धांतों के कई तत्व विद्यमान हैं। शाडिल्य , नारद जैसे भक्ति शास्त्र के आचार्यों ने जिन भक्ति सूत्रों का प्रणयन किया है, मीरा की भक्ति में ये सारे सूत्र स्वत: भी रूपायित हो गये थे। मीराबाई की भक्ति भावना में वैष्णव संप्रदाय की नवधा भक्ति,चैतन्य संप्रदाय की माधुर्य भक्ति,एवं संत नाथ संप्रदाय की प्रवृत्तियाँ विध्यमान थी। श्रीमदभागवत में वर्णित नवधाभक्ति– श्रवण,कीर्तन,स्मरण, पादसेवन,अर्चन,वंदन,दास्य,सख्य और आत्मनिवेदन मीरा के पदों में दृष्टव्य है। वह संतों के समूह में बैठकर भक्ति के आवेश में कीर्तन करती है। मीरा मंदिर में करताल और पखावज बाजा-बजाकर नाम कीर्तन में विलीन हो जाती है। जैसे -

"बसो मोरे नैनन में नंदलाल।
मोहनि मूरति सांवरि सूरति,नैणा बने बिसाल।
अधर सुधारस मुरली राजत,उर बैजंती माल"।

नाथपंथी अवधूत का वैराग्य,सूफियों की छलक़ती हुई प्रेम की गागरी और कृष्ण का अनुपम सौन्दर्य ,सब मीरा में मिला जुला है। मीरा निर्गुण जोगी और सगुण कृष्ण दोनों को एक तराजू में तौलती है। फिर इस निष्कर्ष पर पहुँचती हैं कि मन का मीत तो श्याम ही हो सकता है जो भीतर से जुड़ता है और हृदय को तृप्त कर सकता है। जैसे -

"जाबादे जाबादे जोगी/ किसका मीत । सदा उदासि रहे मोरि/ सजनी, निपट अटपटी रीत"।

मीरा के कृष्ण का गठन उनके वैचारिक चिंतन के मंथन से हुआ है। उनकी भक्ति साधना उनके स्वतंत्र चिंतन और स्वतंत्र व्यक्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित थी। इसलिए न तो उन्होंने लौकिक बंधनों को स्वीकार किया और न ही किसी भक्ति पंथ या संप्रदाय के आश्रय को स्वीकार किया। अपने जीवन में उन्होंने विभिन्न संप्रदायों के आचार्यों ,भक्तों व संतों के सत्संग का लाभ अवश्य लिया किन्तु किसी पंथ की सदस्यता नहीं ली। मीरा अपनी भक्ति को गिरधर के चरणों में समर्पित करने में ही अपने जीवन की सार्थकता मानती है।

4. श्रीकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा,प्रेम व समर्पण

मीरा की रचनाओं में श्रीकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धा,प्रेम, व समर्पण सहज ही बरसता है। भागवत धर्म में भक्त का जो रूप प्रकट होता है उसी रूप में विरहिणी मीरा दिखाई देती है। मीरा कहीं तो कृष्ण के प्रेम की चातकी है,कहीं विरह कोकिला,कहीं होली खेलने को व्याकुल गोपी,कहीं प्रेमोन्माद में नृत्य करती हुई प्रेयसी। मीरा का प्रेम इंद्रियों से परे अतींद्रिय का स्पर्श करता है। मीरा की आध्यात्मिक यात्रा के तीन सोपान हैं। कृष्ण केलिए मीरा का लालायित होना एवं मिलन केलिए तड़पना पहला सोपान है। जैसे –

"मैं बिरहणि बैठी जागूँ,जगत सब सोवे री आली"

कृष्ण भक्ति से उपलब्धियों की प्राप्ति इसका दूसरा सोपान है। वह कहती है-

"पायो जी मैं ने रामरतन धन पायो"।

मीरा का आत्मबोध हो जाना तीसरा सोपान है। भक्ति की चरम सीमा पर खड़ी मीरा बड़े सहज भाव से कहती है-**"मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई"। जाके सिर मोर मुकुट ,मेरो पति सोई"।**

मीरा अपने प्रियतम से मिलकर एकाकार हो गयी है। मीरा के काव्य में सांसारिक बंधनों का त्याग एवं ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण भाव मिलता है।उसकी भक्ति में ढोंग, आडंबर और मिथ्या मान्यताएँ दिखाई नहीं देती,बल्कि भक्ति का सरलतम मार्ग स्मरण-नृत्य और गायन है। मीरा की भक्ति उसके भक्ति तत्व के अनुरूप ही सहज निराडंबर और रागपूर्ण है। मीरा के काव्य में प्रेम और भक्ति की तन्मयता है। उनके 'गिरधर' शब्द में आत्मीयता और विश्वास दोनों भरा हुआ है । जहां वह ज़ाहिर करती है-

"हरि मेरे जीवन प्राण आधार/और आसिरो नाहीं तुम बिन,तीनू लोग मँझार"।

दरअसल मीरा का प्रेम आत्मसमर्पण और आत्मविश्वास का अनुपम मिसाल ही है। । उनकी कविता में मुक्ति की चेतना प्रेम के माध्यम से व्यक्त हुई है।

5. प्रेमाभक्ति/माधुर्य भक्ति की उपासिका मीरा

प्रेम सम्पूर्ण भक्तिकाव्य का केंद्रीय भाव है। शाडिल्य और नारद भक्तिसूत्र के अनुसार अपने आराध्य में अनुराग या अनन्य प्रेम ही भक्ति है। मीरा की भक्ति और प्रेम में अंतर नहीं है। वह निर्भय और निर्द्वंद्व आत्माभिव्यक्ति के रूप में सीधा और प्रत्यक्ष प्रेमनिवेदन करती है। मीरा का दर्शन प्रेम का दर्शन है जिसमें उनका द्वैत अद्वैत में परिवर्तित होकर आत्मा-परमात्मा के अटूट संबंध के सत्य को प्रकाशित करता है। उनकी प्रेमा भक्ति मधुर रस से पूर्णत:आप्लावित थी। मीरा की भक्ति के संबंध में विद्वानों के बीच कई मत प्रचलित हैं। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी,डॉ.कृष्णदेव झारी जैसे विद्वानों ने मीरा की भक्ति को प्रेमाभक्ति कहा है। ओमप्रकाश अग्रवाल,डॉ सुमन शर्मा,डॉ शिवकुमार शर्मा जैसे विद्वानों ने मीरा की भक्ति को 'माधुर्य भक्ति' कहा है। डॉ नरेंद्र भानवत, डॉ रामप्रकाश,प्रो.देशराजसिंह भाटी आदि ने मीरा की भक्ति को निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में देखा है।

मीरा की भक्ति भावना और पदावली लोकमानस की अनमोल धरोहर है, जो प्रेरणादायी है। गिरधर गोपाल की अनन्य उपासिका मीराबाई के पदों में माधुर्य भाव की भक्ति का साकार सागर उमड़ पड़ा। गोपी भाव से माधुर्य भक्ति में तल्लीन है मीरा। आराध्य एवं प्रियतम कृष्ण के प्रति प्रगाढ़ प्रेम की पराकाष्ठा ही प्रेमाभक्ति है। गिरधर गोपाल के प्रति दाम्पत्य भाव की आराधना मीरा की साधना के वे परमोज्वल भाव हैं जिन पर मीरा की माधुर्यभक्ति का आध्यात्मिक महल खड़ा है। मीरा के माधुर्य भाव में सभी प्रकार का द्वैत समाप्त होकर केवल एक ही राग रह जाता है। । यह एक ऐसी दिव्य स्थिति है जिसमें आत्मा व परमात्मा एकाकार हो जाते हैं। यहाँ द्वैत होते हुए भी अद्वैत है । और अद्वैत होते हुए भी द्वैत है।

मीरा मूर्त जीवन की निस्सारता से ऊबकर अमूर्त की और यात्रा करती हैं। वहीं उन्हें चैन सुकून और विराम मिलता है। इसी रूप में मीरा का प्रभु अविनाशी हो जाता है। घूँघरू मीरा केलिए एक नया प्रतीक बना। यह जीवन का उत्साह और जीवन जीने की इच्छा के रस से सरोबार करने का भव्य अनुष्ठान है-

"मैं तो सांवरे के रंग राची। /साजि सिंगार बांधि पग घूँघरू लोक लाज तजि नाची'।

भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेमरूपा है और प्रेम रूपा भक्ति को प्राप्त करने के बाद न किसी वस्तु की इच्छा रहती है,न शोक रहता है और न द्वेष रहता है और जिसे प्राप्त कर मनुष्य उन्मत्त हो जाता है। मीरा ने वही पा लिया है। मीरा की भक्ति की चरम सीमा भी यही है। मीरा के गीत पाठकों को आस्था, साहस,प्रतिबद्धता और ईश्वर के प्रति प्रेम की प्रेरणा देता हैं।

6. मीरा की भक्ति में लोकचेतना

समय के साथ राजपथ छोड़कर मीरा जनपथ में विलीन हुई । राजसी वैभव एवं भौतिक सुख सुविधाओं से दूर रहकर पूर्णत: मीरा लोक से जुड़ी रही। मीरा ने लोक का सहारा लेकर दर्शन की दुरूहता को सरल,व्यावहारिक और सर्वसुलभ बना लिया। मीराबाई का संसार लोक से निर्मित संसार है। लोक केलिए समर्पित है। शायद इसलिए उनकी कविताओं में बिम्ब और प्रतीक सीधे-सीधे लोक से ही आते हैं। व्यक्ति केलिए वह जन पदबंध का प्रयोग करती है।मीरा के 'गिरधर नागर' में मनुष्य और ईश्वर का भेद मिट जाता है। लोक उनकी कविताओं का मूल तत्व है जबकि विद्रोही स्वर प्राण तत्व । उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उनमें प्रेम,भक्ति और विद्रोह साथ-साथ चलते हैं। उनकी रचनाओं में भक्ति की उदात्त भावानुभूति ही नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से जीने की इच्छा भी अभिव्यक्त हुई है।

मीराबाई की बेबाक अभिव्यक्ति 'बहुजन हिताय'का निहितार्थ थी। उन्होंने रूढ़ियों में जकड़े समाज में परिवर्तन लाने केलिए भक्ति के मार्ग को अपनाया। उन्होंने आतंक उत्पन्न करनेवाली सामंती सत्ता के बरअक्स उससे भी बड़ी एक ईश्वरीय सत्ता खड़ी कर दी थी। यह भक्ति और प्रेम रस में डूबी कृष्ण की सत्ता थी, जहां समरसता और समानता का भाव ही अग्रणी था ।

7. मीरा,आंडाल और अक्कमहादेवी - एक तुलना

मीराबाई की तुलना दक्षिण की आठवीं शती की आंडाल और बारहवीं शती की अक्कमहादेवी से कर सकते हैं। तमिल और कन्नड के काव्य रचकर भारत की भक्ति परंपरा को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रयत्न इन्होंने किया है। इन तीनों के जाति,धर्म संप्रदाय,देश,काल,वातावरण,भाषा,वेश-भूषा,रीति-रिवाज आदि में विभिन्नताएँ हैं। फिर भी भक्ति के धरातल पर एक बन भारतीय भावात्मक एकता के दर्शन कराती है।

दक्षिण भारत की अलवार भक्ति धारा का कोमल प्रवाह आंडाल के हृदय से प्रवाहित होता है और उत्तरी भारत की भक्तिधारा को मीरा रससिक्त कर देती है। दोनों ही कृष्ण के प्रेम के सौंदर्य संसार में एकाकार हो गई है। मीरा के 'गिरिधर नागर' और आंडाल के 'रंगनाथ छबीले' मुरलीधर कृष्ण ही हैं। अक्क म्महादेवी शिव की उपासिका थी। वे चेन्नमल्लिकार्जुन (शिव)को अपना प्रियतम मानती थी। बारह आलवारों में एकमात्र महिला साध्वी है आंडाल । उन्होंने मीराबाई की तरह स्वयं को कृष्ण की दुल्हन माना। दोनों अलौकिक,अपार्थिव विराट भूमि पर खड़ी है और दोनों ही गोपी भाव से माधुर्य भक्ति में तल्लीन है। दोनों की तन्मयता ने गीति परंपरा से भारतीय भक्ति साहित्य को समृद्ध किया है। आंडाल के पदों में (तिरुप्पावै संग्रह) दास्य भाव की अभिव्यक्ति हुई है। दोनों ही कृष्णलीला के रस को मोक्ष के रस से अधिक महत्वपूर्ण मानती है। मीरा और आंडाल के पदों का विश्लेषण किया जाये तो दोनों में प्रेम की अटूट केन्द्रीयता और आनंद भाव की तन्मय शक्ति मिलता हैं। भक्ति का प्रपत्तिमार्ग दोनों ने अपनाया है । कृष्ण के गुणों का वर्णन ,पूर्ण समर्पण,दीन भाव से स्तुति,भगवान के रक्षक रूप पर दृढ़ विश्वास मीरा और आंडाल में मिलते हैं। मीरा जैसी विद्रोही चेतना और निर्द्वन्द्व प्रेम भावना यदि भारत की किसी अन्य भक्त कवयित्रि में है तो वह 12वीं सदी की कन्नड की अक्कमहादेवी में विद्यमान है। अक्कमहादेवी उसी तरह शिव को अपना पति मानती थी जैसे मीरा कृष्ण को। कहा जाता है कि मीरा अपने जीवन के अंत में कृष्ण की मूर्ति में समा गई । ठीक उसी तरह अक्कमहादेवी भी शिव से एकाकार होकर इस लोक से विदा हुई। अक्कमहादेवी के वचनों में वैसी ही उत्कट प्रेम भावना और उदात्त आध्यात्मिक चेतना है जैसे मीरा के काव्य में है। मीरा की तरह उनकी कविता में गहरी वेदना की अभिव्यक्ति है जो लौकिक एवं अलौकिक भी है । कन्नड की मीरा अक्कमहादेवी का विवाह भी राजघराने में हुआ था। लेकिन वहाँ से विद्रोह कर सबकुछ छोड़कर ईश्वरीय प्रेम में डूब गई। यही साहस ,यही भटकाव,यही प्रणयाकांक्षा और यही विरह कातरता हम मीरा में देखते हैं। उन्होंने कृष्ण की खोज में मेवाड़ से मेडता, मेड़ता से वृंदावन,वृंदावन से द्वारिका में यात्रा की। अपना सारा जीवन जिसकेलिए समर्पित किया था, उसी की खोज में निकली थी। यह खोज उनका जीवन और उनकी साधना थी। अक्कमहादेवी के साहित्य को कन्नड में बचन साहित्य कहते हैं। उनके वचनों में सत्ता के विरुद्ध उस तरह का मुखर विद्रोह देखने को नहीं मिलता,जिस तरह मीराबाई अपने पदों में राणा के विरुद्ध युद्ध दुंदुभी बजाती हुई दिखती हैं। इन तीनों भक्तकवयित्रियों के काव्य की मूल संवेदना कई स्तरों पर एक रूप ही है । ये तीनों भक्ति आंदोलन की सांस्कृतिक शक्ति की अखंडता को सामने लाती हैं। काव्यानुभूति की व्यापकता और गहराई,काव्यभाषा की सहजता और लोकोन्मुखता तथा पदों की संगीतमयता के कारण जैसी अखिल भारतीय ख्याति मीरा की है वैसी किसी अन्य भक्त कवयित्रि की नहीं।

8. केरल में कृष्णभक्ति

केरल में कृष्ण भक्तों और कृष्ण मंदिरों की संख्या ज़्यादा है। केरल के कृष्ण मंदिरों में कृष्ण की प्रतिष्ठा कई रूपों में हैं। गुरुवायूर और अंबलप्पुषा मंदिर में बालकृष्ण का रूप है तो पत्तनमतिट्टा जिले के पार्थसारथी मंदिर में अर्जुन के सारथी का रूप। चित्ररचना में गुरुवायूर मंदिर के भित्तिचित्र प्रसिद्ध है। केरल के संगीत और कथकली,कूड़ियाट्टम,भरतनाट्यम जैसी नृत्य कलाओं में कृष्ण संबंधी कई घटनाएँ अंकित है।

सोलहवीं शती की केरल की प्रसिद्ध कृष्ण भक्ता है 'कुरूरम्मा' । उनकेलिए कृष्ण संतान था और उनमें माँ सहज वात्सल्य भक्ति की पुष्टि मिलती है। । वे केरल के गुरुवायूर के प्रसिद्ध श्रीकृष्ण मंदिर के देवता गुरुवायूरप्पन की भक्ता थी । ऐसा विश्वास है कि उनकी अटूट भक्ति के कारण उन्हें भगवान कृष्ण के दिव्य दर्शन प्राप्त हुए। वे त्रिश्शूर जिले के एक नंपूतिरि परिवार से थी।16 साल की उम्र में विधवा हो गई। उनकी कोई संतान नहीं थी

और वह गुरुवायूरप्पन याने कृष्ण की प्रबल भक्ता बन गई। कुरूर परिवार की सबसे वरिष्ठ सदस्या थीं,इसलिए वे कुरूरम्मा के नाम से विख्यात हुई । उन्हें एहसास हुआ कि भगवान कृष्ण के अलावा दुनिया में उनका कोई ओर नहीं है। मीरा,अक्कमहादेवी और आंडाल की तरह इनकी कोई पदावली या साहित्यिक रचनाएँ नहीं हैं। इसीलिए केरल को छोड़ भरत के किसी भी प्रांत में इनकी ख्याति नहीं है।

9. निष्कर्ष

वस्तुत: राजवंश में जन्म लेनेवाली भक्त शिरोमणि मीराबाई ने भक्ति का जो संदेश लोक मानस में विस्तारित किया वह पदों व भजनों की सरिता के रूप में राष्ट्रीय व राज्य सीमाओं का अतिक्रमण कर सम्पूर्ण अंतर्राष्ट्रीय लोकजीवन में प्रभावित हो गया है। हमारेलिए वे एक समृद्ध भक्ति साहित्य को छोड़ गई है जिन्हें उन्होंने रच-रचकर गाया और उसके द्वारा अपना ही नहीं अन्य भक्तों का भी मार्गदर्शन किया। मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के इतिहास में मीरा एक ऐसी विरल विभूति है जिसने बिना किसी आश्रय के अपने आत्मबल,निडरता,पूर्ण आत्मविश्वास और अपने आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव से भक्ति साधना कर अंतत: अपने जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया। मीरा आज देश-काल की सीमाओं को लांघकर भक्ति की विश्व विरासत बन चुकी है। यही मीरा की भक्ति का सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक आयाम है।